P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4* (Part-1) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

रामराज्य की अवधारणा और गाँधी–दर्शन

राज भारद्वाज
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
भगिनी निवेदिता कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली

सारांश

गांधी जी को रामराज्य की अवधारणा एक प्रकार से स्वराज्य के रूप में प्राप्त हुयी। गांधी जी जगह–जगह के अपने भाषणों में कभी–कभी स्वराज का अर्थ समझाने के लिए रामराज्य का प्रयोग करते हैं। गांधी जी के विचारों में यह रामराज्य ही स्वराज्य है। गांधी जी प्रेम,त्याग,दया और अहिंसा के समर्थक थे। वे बेरोज़गारी, भ्रष्टाचार , दरिद्रता एवं शोषण को मिटाना चाहते थे।

मुख्य शब्द : रामराज्य, महात्मा गाँधी, बेरोज़गारी, भ्रष्टाचार, दरिद्रता।

प्रस्तावना

महात्मा गाँधी राजनीति के प्रणेता ही नहीं थे बल्कि वे एक आध्यात्मिक, अहिंसक, दार्शनिक, समाजसुधारक, अर्थशास्त्री, आचारशास्त्री, प्रयोगधर्मी, सत्याग्रही और क्रांतिकारी विचारों से ओत–प्रोत थे। इन सबके बावजूद वे एक आम आदमी के रूप में जाने जाते थे। जिनका व्यक्तित्व सहज और सरलता से परिपूर्ण है। वह बीसवीं और 21वीं सदी के महान विचारक माने जाते हैं। गुजरात उनकी जन्मस्थली रही है। वह अपने समय के ऐसे समाज सुधारक या महान सामंजस्यकर्ता थे जिस समय में राम अपने समय के थे। गाँधी ने भगवान राम की तरह मर्यादा और शील को अपनाया। जिस तरह से तुलसीदास ने रामचरितमानस में राम को मर्यादा पुरुषोत्तम बताया और राम नाम के नायक का महत्त्वपूर्ण चित्रण किया, उसी तरह के मर्यादा पुरुषोत्तम नाम गाँधी का भारतीय समाज में रहा था। गाँधी का सत्याग्रह और अहिंसा आमजन के लिए आज भी एक प्रभावी औज़ार की तरह कार्य करते हैं। रामचरितमानस में राम का वैज्ञानिक दृष्टिकोण दिखायी देता है और राम ने समाज को वैज्ञानिक आधार पर समझने की कोशिश की। गाँधी जी ने भी समाज को वैज्ञानिक आधार पर समझने की कोशिश की थी। वे खुद बोलते थे, कि मैं किसी ऐसी उच्चस्तरीय मशीन के पक्ष में सहमत हूँ जो भारत की गरीबी मिटाने की बात कहे। वे कहते थे, कि मैं चरखों को नष्ट कर दूँगा अगर कोई इसे बेहतर और सार्वभौमिक राजनीतिक कार्यक्रम दिखा सके तो मुझे बहुत खुशी होगी। तुलसीदास ने परम्परागत धार्मिक, सांस्कृतिक, नैतिक, सामाजिक जीवन को प्रस्तुत किया है। उन्होंने अपने समाज को चित्रित करते हुए युगीन समस्याओं को हमारे सामने प्रकट किया। गाँधी ने भी अपने हिन्द स्वराज में समन्वयकारी दृष्टिकोण का परिचय दिया। इसी सन्दर्भ में रामचरितमानस की निम्न पंक्तियाँ इस प्रकार देखी जा सकती हैं– ''उन्होंने अपने समन्वयकारी दृष्टिकोण के द्वारा हिन्दू समाज को दृढ़ अवलम्बन प्रदान किया, उसमें आस्था और विश्वास की नई ज्योति भर दी।''[1]

अध्ययन का उद्देश्य

महात्मा गांधी ने तुलसीदास रचित रामचरितमानस के आदर्श को आधुनिक रूप में हमारे सामने प्रस्तुत किया है। तुलसी रामचरितमानस में भगवान राम को समाज उत्थानकर्ता मानते हैं और रामराज्य स्थापित करते हैं। महात्मा गांधी ने भी भारतीयों के लिए जिस समाज का सपना देखा था उसे ' हिन्द स्वराज ' में रामराज्य की संज्ञा दी। इसलिए वर्तमान समय में गांधी के विचारों को स्वीकार करना ही होगा क्योंकि इसके अलावा और कोई विकल्प नहीं।

गाँधी जी को रामराज्य की अवधारणा एक प्रकार से सर्वोदय के रूप में प्राप्त हुई। यह 'सर्वोदय' की प्रेरणा गाँधी जी को जॉन रस्किन की पुस्तक 'अन टू द लास्ट' से मिली। जिसमें गाँधी जी तुलसी की 'सब' वाली अवधारणा यानी सभी के कल्याणकारी भाव के रूप में देखते हैं जिसमें तुलसी द्वारा स्थापित राज्य में जनता के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और शैक्षणिक जीवन का स्वप्न देखने को मिलता है। सबसे प्रमुख बात तो यह है कि राम के व्यक्तित्व का प्रभाव इस कदर बना हुआ है कि प्रजा में न कोई दुःखी है, न ही निरोगी। सभी अपना–अपना काम करते हैं धर्म और नीति के अनुसार अपना जीवन व्यक्तित्व करते हैं। सभी सद्गुणी, ज्ञानी एवं और पंडित हैं, न कोई शोषित है, न ही कोई दलित, दमित। राम के राज्य में विषमता नाम की कोई चीज नहीं, वह पूरी तरह

समाप्त हो चुकी है। जबकि गाँधी के लिए नीति का अर्थ है मन और इन्द्रियों को अपने वश में करना और यही नीति 'रामराज्य' का मूलाधार है। गाँधीजी 'सर्वोदय' वाली अवधारणा को पूरी तरह से 'रामराज्य' की अवधारणा के रूप में देखते हैं।

गाँधीजी जगह–जगह अपने भाषणों में कभी–कभी 'स्वराज्य' का अर्थ समझाने के लिए 'रामराज्य' शब्द का प्रयोग करते हैं जिस तरह से प्लेटों ने 'द रिपब्लिक' नामक पुस्तक में दार्शनिक राजा और आदर्श राज्य की अवधारणा स्पष्ट करते हैं, उसी तरह तुलसी रामचरितमानस के उत्तरकांड में रामराज्य की अवधारणा प्रस्तुत करते हैं। गाँधी को ब्रिटिश राज्य को राक्षसी राज्य के रूप में देखने की परिकल्पना तुलसी के रामचतरितमानस से ही मिली और उनके विकल्प स्वरूप उन्हें तुलसी की 'रामराज्य' की परिकल्पना का प्रयोग वह 'स्वराज्य' के लिए करने लगे। 4 नवम्बर 1920 को नासिक में दिए उनके भाषण का एक अंश द्रष्टव्य है– ''आजकल जो हुकूमत हम पर शासन कर रही है, वह केवल राक्षसी है। मैं उसे रावण–राज्य कहता हूँ।... ऐसी राक्षसी हुकूमत में रहने वाली रैयत क्या करे? तुलसीदास ने कहा कि जो असंगत है, जो बुरे हैं, उनकी असंगति की जाये– उनका संग छोड़ा जाये, उनकी मुहब्बत तोड़ दी जाये, उनसे असहयोग किया जाये, उन्हें मदद देना बन्द कर दिया जाये। यह एक यज्ञ है, उसमें जब हम अपना बलिदान देंगे, तभी खुद शुद्ध होंगे और रावण राज्य को मिटा कर रामराज्य की स्थापना कर सकेंगे। यह रामराज्य ही स्वराज्य है। स्वराज स्थापित किए बिना हम इस राक्षसी राज्य से छूट नहीं सकते।''[2]

ऐसा सुना और माना जाता है कि रामचरितमानस तुलसीदास की निजी कल्पना का परम्परागत आदर्श रूप है। गाँधी जी ने इसी आदर्श को आधुनिक रूप में हमारे सामने प्रस्तुत किया। तुलसी ने जिस आदर्श रामराज्य की परिकल्पना की थी ठीक उसी प्रकार गाँधी जी ने भी रामराज्य की और प्लेटो ने भी 'रिपब्लिक' पुस्तक में आदर्श शासन व्यवस्था का रूप प्रस्तुत किया। गाँधी की यह अनुकृति नहीं है, बल्कि रामचरितमानस के आदर्श को स्थापित करने का एक प्रयास है। गाँधी ने व्यक्तिगत सर्वोदय पर जोर दिया था यानी जीवन के सभी पक्षों पर ध्यान। जिस तरह तुलसी 'मानस' में 'सब' शब्द का प्रयोग करते हैं वह ब्राह्मण, वैश्य, शुद्ध, क्षत्रिय सभी जातियों के लिए करते हैं। जिस तरह सभी जातियों का उत्थान करना यानि सम्पूर्ण समाज की मानव जाति का कल्याण है। जिस तरह गाँधी व्यवहार और दर्शन के सिद्धांत पर आगे बढ़ते रहे उन्होंने कही कोई बुरी और अन्यायपूर्ण बातों का अनुसरण कभी कहीं भी नहीं किया। गाँधी ईश्वर प्राप्ति का साधन मोक्ष को मानते थे। वह एक विद्रोही व्यक्ति थे जिस प्रकार उनके बारे में नंदकिशोर आचार्य कहते हैः ''महात्मा गाँधी एक विद्रोही महात्मा थे लेकिन इनका विद्रोही केवल राजनीतिक परिवर्तन तक सीमित नहीं है। वह समाज में प्रचलित सभी अन्यायपूर्ण धारणाओं के प्रति विद्रोह करने का रूख अपनाते हैं। दलितों को बराबरी का हक दिलवाने के लिए जब वह उनके मंदिर प्रवेश का आंदोलन चलाते हैं, तो वह सनातन धर्म में आ गई रूढ़ियों के प्रति विद्रोह करते हैं जिन्हें सनातनी पंडित अपने धर्म के सिद्धान्तों पर आधारित मानते थे। गाँधी के दलितोद्धार के प्रयास उन्हें अपनी सामाजिक व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह लगते थे और उसे देखने के लिए महात्मा गाँधी की हत्या की भी कोशिश की गई थी। गाँधीजी ने तो यहाँ तक कह दिया कि यदि धर्मशास्त्र भी अस्पृश्यता का समर्थन करते हो, तो वे ऐसे धर्मशास्त्रों का समर्थन नहीं कर सकते। सामान्यतः, महात्मा गाँधी को धार्मिक व्यक्ति समझा जाता है, इसलिए इसे धर्म सम्मत कहे जाने वाले अन्याय के विरूद्ध एक सच्चे धार्मिक व्यक्ति का विद्रोह ही कहा जा सकता है।''[3]

गाँधी जी का 'धर्म' से तात्पर्य सनातन हिन्दू धर्म से है और धर्म की सारी बुनियादी मान्यताएँ गाँधी ने वहीं से प्राप्त की है। 'धर्म' का प्रयोग हम लोग आम तौर पर ऐतिहासिक–धार्मिक–सम्प्रदायों के सन्दर्भ में करते आ रहे हैं। जब हम धर्म द्वारा नियंत्रित निर्देशित राज–व्यवस्था को 'ईश्वरीय राज्य' या 'ईश्वरीय शासन' के रूप में देखते हैं। गाँधी जी भी कई जगहों पर 'ईश्वरीय राज्य' की बजाय 'रामराज्य' शब्द का प्रयोग करते दिखाई देते है। जिसका सीधा अर्थ अन्यायपूर्ण शासन व्यवस्था से है। गाँधी की मूल चिंता 'अधर्म' और 'शैतानी सभ्यता' को नष्ट कर 'धर्म' और 'ईश्वरीय राज्य' की स्थापना करना था, वह अपने समय में 'हरिजन' पत्रिका में अपने उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए कहते हैं– ''यदि लोग ईश्वर का अनुगमन करें तो दुनिया में आज जो भ्रष्टाचार और मुनाफ़ाखोरी दिखाई दे रही है, वह समाप्त हो जाय। अभी, अमीर और भी अमीर हो रहे हैं तथा निर्धन और भी निर्धन हो रहे हैं। सब तरफ भूख, नंगेपन और मौत का आलम है। ये ईश्वर के साम्राज्य के नहीं बल्कि शैतान, रावण या ईसा–विरोधी साम्राज्य के चिन्ह हैं। हम केवल होठों से ईश्वर के नाम का जप करके पृथ्वी पर उसका शासन नहीं उतार सकते। हमारा आचरण शैतान के बजाय ईश्वर के अनुरूप होना चाहिए।''[4]

देखा जाए तो गाँधी जी जीवनपर्यन्त 'हिन्द स्वराज' में कही गयी बातों का ही मूल रूप से अनुकरण करते रहे। इस क्रम में जो एक शब्द उनकी स्वराज कल्पना से सम्बंधित जुड़ा वह था 'रामराज्य'। 'हिन्द स्वराज' के अनुरूप वो ऐसा भारत की परिकल्पना देखना चाहते थे जिसमें विदेशी तालिम से दी गई शिक्षा, भाषा, संस्कृति, मशीनी सभ्यता और ऐशो–आराम से जुड़ी व्यवस्था से दूर रहने की वकालत करते थे। वह प्रेम, त्याग दया, अहिंसा, संयम के पैराकार थे, वह भूख, बेरोजगारी, शोषण, दरिद्रता आदि सब कुछ को मिटाना चाहते थे। इन सब पीड़ाओं से मुक्त राष्ट्र अपने 'हिन्द स्वराज्य' में देखना चाहते थे। गाँधी जी ने जो सपना 'हिन्द स्वराज' में देखा था वही सपना उन्हें जनता के रोम–रोम में रामराज्य की इच्छा के अनुसार दिखाई दिया, क्योंकि रामराज्य की विशेषताएँ 'हिन्द स्वराज्य' के समान थी इसलिए गाँधी का दयाबल आत्मबल है, सत्याग्रह है। और इस बल के प्रमाण उन्हें जगह–जगह दिखाई देते हैं। अगर यह बल नहीं होता तो पृथ्वी रसातल में पहुँच गई होती। जिस तरह गाँधी जी 'हिन्द स्वराज' में सत्याग्रह या आत्मबल, अहिंसा, सत्य आदि को आचरण में उतारने पर

बल देते हैं वे इस महत्व को उजागर करते हुए 'हिन्द स्वराज्य' में तुलसीदास जी द्वारा लिखा दोहा उद्घृत करते हैं–

''दया धरम को मूल है, पापमूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िए, जब लग घट में प्रान।।''[5]

तुलसी और गाँधी ने मनुष्य और मनुष्येतर दोनों ही दृष्टिकोण से 'रामराज्य' जैसी व्यवस्था को सर्वहितकारी सर्वकल्याणकारी शासन व्यवस्था के रूप में चित्रित किया। देखा जाए तो 'रामराज्य' में सिर्फ मनुष्य ही डर, विषमता, शोषण, अन्याय, रोग, दरिद्रता, हिंसा से मुक्त नहीं होगा बल्कि पशु–पक्षि भी एक दूसरे से निर्भय होकर सुखी जीवन व्यतीत कर जीने वाले बन सकेंगे। रामराज्य के व्यापक दायरे में जिस तरह मनुष्य और मनुष्येतर प्राणियों में शान्तिपूर्वक–सहअस्तित्व की जो सुरक्षा की भावना दिखाई देती है वहीं गाँधी के स्वराज्य में सभ्यता, स्वराज, विकास और समानता सम्बंधित चिंतन मुख्य सरोकर के रूप में देखने को मिलते है। रामचरितमानस तुलसी द्वारा रचा गया महानतम ग्रंथ है जो भारतीय आदर्श समाज की व्यवस्था का सम्पूर्ण चित्र प्रस्तुत करता है इसी संदर्भ में प्रस्तुत पंक्तियाँ देखी जा सकती हैं– रामचरितमानस भारतीय वाङ्मय का वह अनूठा महाकाव्य है, जिसमें भारत की साहित्यिक सम्पदा और सांस्कृतिक परम्परा को व्यापक एवं पूर्ण अभिव्यक्ति मिली। हमारी सहज मानवीय संस्कृति और परम्परागत मान्यताओं का वीर क्षीर विवेचन कर तुलसी ने मानस को भारत की शताब्दियों, पुरानी परम्पराओं के औदात्य के साथ जोड़ा है। मानस निर्विवाद रूप से एक ऐसी कालजयी कृति है जिसके माध्यम से हम न केवल साहित्यिक रचनाशीलता के विभिन्न प्रतिमानों का अनुभव करते हैं, बल्कि इस महानीय ग्रंथ में सुदीर्घ भारतीय परम्परा के वैविध्य का साक्षात्कार भी होता है। यह देश अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक परम्पराओं और जीवन–मूल्यों के लिए सारे संसार के बीच शताब्दियों से अपनी पहचान बनाए हुए है। मानस में भारत की इसी पारंपरिक अस्मिता का वैविध्यपूर्ण परिदर्शन उपलब्ध है। यह केवल काव्य नहीं, इस महामानव समुद्र की विराट सांस्कृतिक चेतना और संस्कारों की आदर्श परम्परा का उद्घोषक है।''[6] तुलसी को इस बात का डर था की मानस या रामराज्य कहीं किसी खास धर्म की राजनीति का ग्रंथ बनकर न रह जाये इसलिए उन्होंने कहीं भी 'हिन्दू' शब्द का प्रयोग नहीं किया। जिस कवि ने 'कीरति भनिति भूति भलि सोई, सुरसरि सम सब कहँ हित होई' कहकर कविता का लक्ष्य ही स्पष्ट कर दिया और बिना भेदभाव से सबका हित घोषित करने वाला सिद्ध कर दिया उसी तरह उसकी सोच के अनुसार उसका धर्म भी या रामराज्य किसी एक वर्ग या किसी खास धर्म के हितार्थ कभी नहीं हो सकता था। वह सुरसरि यानी नदी के समान 'सर्वजन–हिताय', 'सर्वजन–सुखाय' वाली बात ही करेंगे। वह 'सब' शब्द में मनुष्य जाति ही नहीं पशु–पक्षियों की जाति को भी सम्मिलित करते हैं। जिस 'रामराज्य' में सभी प्राणी सुखी, निरोग, अहिंसक, समान, निडर निर्भय हो, उसमें ऐसी ही स्थिति मनुष्यों से अलग प्राणियों यानि पशु–पक्षियों के लिए भी है यह इन पंक्तियों में देखा जा सकता है–

''फूलहिं फरहिं सदा तरू कानन।
रहहि एक संग गज पंचानन।
खग मृग सहज बयरू बिसराई।
सबन्हि परस्पर प्रीति बढ़ाई।
कूजहिं खग मृग नाना वृंदा।
अभय चरहिं बन करहिं अनन्दा।
सरिता सकल बहहि बर बारी।
सीतल अमल स्वाद सुखकारी।।''[7]

तुलसी रामचरितमानस में भगवान श्रीराम को समाज का उत्थानकर्ता मानते थे। वह शरणागत के दुख का नाश करते थे, वही स्थिति गाँधी के 'स्वराज्य' में भी देखने को मिलती है। जिस प्रकार राम शबरी के झूठे बैर खाकर भेदभाव और अस्पृश्यता रूपी कलंक को मिटाना चाहते थे वैसे ही गाँधी भी दलितों को समाज का एक महत्त्वपूर्ण भाग मानते थे। जिस तरह गाँधी ने 'भंगी' के लिए 'हरिजन' शब्द का प्रयोग समाज में समानता स्थापित करने के लिए अथक प्रयास किया। गाँधी जी की मान्यता यह थी कि वह नीति विषयक विषयों के साथ–साथ उत्पत्ति और विकास पर बल देते थे। उनका मत था बुराई का बदला भलाई से किया जाना चाहिए। ठीक इसी प्रकार की मान्यताएँ भगवान श्रीराम रखते थे। भगवान श्रीराम तब खुश रहते थे जब उनकी प्रजा खुश रहती थी। इसी संदर्भ में ये पंक्तियाँ देखी जा सकती है– ''पुरजन परिजन सकल निरोही। तात सुनाएहु बिनती मोरी। सोई सब भाँति मोर हितकारी। जातें रह नराहु सुखादी।'' अर्थात् हे तात! सब पुरवासियों और कुटुम्बियों से अनुरोध करके मेरी विनती सुनना कि वहीं मनुष्य मेरा सब प्रकार से हितकारी है जिसकी चेष्टा से महाराज सुखी रहें।'' [8]

निष्कर्ष

निष्कर्ष से कहा जा सकता है कि राम का राज्य तुलसी कृत रामकथा का एक अभिन्न अंग है लेकिन सुव्यवस्थित राजनीतिक व्यवस्था के मॉडल के रूप में तुलसी ने रामचरितमानस के लंकाकांड में 'रामराज्य' की परिकल्पना का चित्रण वैसा ही किया जैसा युनानी दार्शनिक प्लेटो ने अपनी रचना 'द रिपब्लिक' में किया। प्लेटो ने अपनी रचना में 'आदर्श राज्य' की अवधारणा एवं दार्शनिक राजा की परिकल्पना का चित्र प्रस्तुत किया। उसी प्रकार गाँधी ने भारतीयों के लिए जो सपना देखा था वह 'हिन्द स्वराज्य' में देखा था जो जन–जन में एक प्रकार से 'रामराज्य' के रूप में बताया गया। 'रामराज्य' की विशेषताएँ 'हिन्द स्वराज्य' के समान एक रूप में थी। वैसे देखा जाए तो आज हर आंदोलन गाँधी के विचारों से कहीं ना कहीं जुड़ा हुआ दिखायी देता है। गाँधी जी की खास बात यह थी कि वो गरीब, दलित, पिछड़ों, किसानों, स्त्रियों, शराबबंदी, गोरक्षा, धर्म, जैसे मुद्दों को हमेशा अपने 'स्वराज्य' में उठाते आये और यही मूद्दों को तुलसी अपने मानस में हर जगह–जगह पर दिखाते है। सवाल यह है, कि आज हम गाँधी के सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह के मर्म को कितना समझे और जीवन में कितना उतार सके। गाँधी की कल्पना में सिर्फ राजनीति ही नहीं उसमें बहुआयामी व्यक्तित्व की कल्पना भी थी जो सिर्फ

आम–आदमी के हित के लिए खड़ी रहती थी। इसी वजह से आज हर जन आंदोलन के पीछे कहीं ना कहीं किसी न किसी रूप में गाँधी जी ही दिखाई देते हैं। वे तमाम अंतर्विरोधों की जीति जागती शख़्सियत थे वे मानवीयता से परिपूर्ण शख़्सियत थे, वहीं, बात तुलसी के राम में देखने को मिलती है।

आज सवाल यह है, क्या हम रामराज्य में निहित 'हिन्द स्वराज' और 'हिन्द स्वराज' में समाहित 'रामराज्य' की अवधारणा के अनुरूप जो सुख–सुविधा हासिल करने वाली जीवन–पद्धति को अपना कर सब कुछ को नष्ट होने से बचा पायेंगे? जिस तरह विकास और सुख–सुविधा के नाम पर बाज़ारीकरण, वैश्वीकरण, उच्च तकनीकि पद्धति, मशीनें, विलासपूर्ण सामग्रियों के प्रति आकर्षण, शहरीकरण, फैशन, सौंदर्य आदि जो हमारे ऊपर प्रभावी या हावी है। इन सबको देखते हुए मुझे लगता है हमें बिना संकोच गाँधी के 'हिन्द स्वराज' के विचारों को अपनाना होगा, जो 'हिन्द स्वराज' तुलसी के 'रामराज्य' का पर्याय रहा है। मुझे लगता है कि हमें युगीन समय में गाँधी की बातों को स्वीकार करना चाहिए, और न ही अब गांधी के अलावा हमारे पास कोई विकल्प दिखाई देता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *रामचरित मानस; भारतीय वाङ्मय के अजस्त्र स्रोतों का संगम : रामचरित मानस के प्रेरणा स्रोत, क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, 2001,पृ. 5*
2. *सम्पूर्ण गाँधी वाङ्मय खंड–18, पृ. 456*
3. *सम्पा. शशि शेखर, कादम्बिनी पत्रिका में प्रकाशित लेख, 'एक विद्रोही महात्मा गाँधी', नंदकिशोर आचार्य, पृ. 43*
4. *नंदकिशोर आचार्य, सभ्यता का विकल्प, पृ. 16 (हरिजन, 23.3.1946, पृ. 186–187)*
5. *महात्मा गाँधी, हिन्द स्वराज, पृ. 57*
6. *तुलसी कृत. रामचरितमानस : भारतीय वाङ्मय के अजस्त्र स्रोत का संगमः रामचरित मानस के प्रेरणा स्रोत, पृ. 5*
7. *श्री भगवान सिंह, गाँधी : एक खोज, पृ. 62*
8. *तुलसीकृत, रामचरितमानस,* गीताप्रेस गोरखपुर, पृ. 426